Daily Gospel Reflections in Hindi

29 July 2019

मत्ती 21: 28-32

DO THE WILL OF THE FATHER

पश्चाताप की आवश्यकता– आज के सुसमाचार के जरिये, प्रभु, पश्चाताप की जरूरत पर जोर देते है। दो बेटे थे, पहले ने पिता की आज्ञा को ठुकराई, पर बाद में मान ली। दूसरे ने, पिता को हां कहने के बावजूद नहीं किया। नतीजतन, पहले पुत्र ने पिता की इच्छापूर्ति की।

Mt.7:24-27 में प्रभु कहते है, ''जो मेरी बातें सुनता और उन पर चलता, वह उस समझदार मनुष्य के सदृश्य है, जिसने चट्टान पर अपना घर बनवाया था। पानी बरसा, नदियों में बाढ़ आई, आधियाँ चली और उस घर से टकराई। तब भी वह घर नहीं ढहा...''। यहां प्रभु, न केवल उनकी बातें सुनने, बल्कि उन पर अमल करने की बात कर रहे है। उनके नाम लेकर भविष्यवाणी करना, अपदूतों को निकालना, चमत्कार दिखाना, आदि काफी नहीं है। ''जो मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्गराज्य में प्रवेश करेगा'' (Mt. 7:21)।

ईश्वर का प्रेम, दया और पाप क्षमा आदि प्रभु येसु के अति महत्वपूर्ण संदेश है ''ईश्वर ने संसार को इतना प्यार किया कि उसने उसके लिए अपने एकलौते पुत्र को अर्पित किया, जिस से जो उस में विश्वास करता है, उसका सर्वनाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन प्राप्त करें'' (Jn. 3:16)। ''...एक पश्चातापी पापी के लिए स्वर्ग में अधिक आनंद मनाया जायेगा'' (Lk. 15-7)। यही संदेश कई पीढ़ियों से नबियों द्वारा ईश्वर, यहूदियों को देते रहें। पर वे समझे नहीं, माने नहीं। ''अपने वस्त्र फाड़कर नहीं, बल्कि हृदय से पश्चाताप करो और अपने प्रभु ईश्वर के पास लौट जाओ, क्योंकि वह करुणामय, दयालु, अत्यन्त सहनशील और दयासागर है'' (Joel 2:13)। इसी पश्चाताप का संदेश लेकर योहन बप्तिस्मा आये थे जिसे यहूदी नेताओं और पुरोहितवर्ग ने ठुकराये। ''परंतु नाकेदारों और वेश्याओं ने उस पर विश्वास किया'' (Mt. 21:32)। पुराने विधान में यहूदियों की और प्रभु के समय के पुरोहितों और धार्मिक नेताओं की एक ही समस्या थी– वे समझते थे कि वे प्रभु की चुनी हुई प्रजा है। वे समझते थे कि वे बच जायेंगे और केवल वे ही बच जायेंगे। लेकिन नबी कहते है– ''उपजाऊ ढाल पर मेरे मित्र की दाखबारी थी। उसने जमीन खुदवाई,... बढ़िया दाखलता लगवा दी... उसे अच्छी फसल की आशा थी, किन्तु उसे खट्टे अंगूर ही मिले'' (Is. 5:1,2)।

आज के सुसमाचार पाठ के दृष्टान्त, प्रभु ने उन पुरोहितों और धार्मिक नेताओं के लिए कहा जिन्होंने योहन बप्तिस्ता में विश्वास नहीं किया, और न ही प्रभु येसु पर। यह आप और मेरे लिए भी हो सकते है अगर हम पत्थर दिल होकर पश्चाताप करने में झिझकते हो। 1946 में Pope Piuss XII ने कहा था– Perhaps, the greatest sin in the world today is that men have begun to lose the sense of sin." संत पापा कहते है कि शायद हमारा सबसे गंभीर पाप यह हो सकता है कि हम भूलने लगे है कि हम पापी है। अपने पापों के प्रति पश्चाताप करें, पिता ईश्वर दौड़कर हमारे पास आकर हमें गले जगायेंगे (Lk. 15:20)।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019